पाठ 2.2 : गद्दार कौन

नारायण लाल परमार

नारायण लाल परमार का जन्म 1 जनवरी 1927 को हुआ। वे छत्तीसगढ़ में नई कविता के प्रारंभिक कवियों में से एक थे। वे हिंदी और छत्तीसगढ़ी के ख्यातिनाम कवि थे। बच्चों के लिए भी उन्होंने कई विधाओं में बहुत–सी किताबें लिखीं। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– ***रोशनी का घोषणा पत्र, काँवर भर धूप, खोखले शब्दों के खिलाफ, सब कुछ निष्पंद है*** *तथा* ***विस्मय का वृंदावन*** *साहित्य के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें मुक्तिबोध सम्मान मिला। 27 जुलाई 2003 को उनका निधन हुआ।*

नवलगढ़ राज्य में यह प्रथा चली आ रही थी कि हर साल दशहरे के दिन राजधानी में एक बड़ा मेला भरता। प्रजा का हर व्यक्ति राजा को अपनी शक्ति के अनुसार भेंट चढ़ाता, राजमहल खूब सजाया जाता। नगर में कम उत्साह नहीं रहता। दूर–दूर से नृत्य मंडलियाँ आतीं, संगीत के कलाकारों का जमाव होता और रामलीला का तो जैसे अंत ही न होता। सचमुच राजधानी मानिकपुरी उस दिन सजी–धजी दुल्हन से कम न लगती।

उस साल भेंट इतनी अधिक चढ़ी कि राजा रामशाह खुद आश्चर्य में पड़ गए। उन्होंने राजा साहब की तारीफ के पुल बाँध दिए और उनकी तुलना भगवान श्रीरामचंद्रजी से करने लगे। वे यह कहने से भी न चूके कि संसार में ऐसा कोई राज्य है तो वह नवलगढ़ राज्य है जिसमें शेर और बकरी एक घाट पर पानी पीते हैं।

राजा साहब सुनकर खुश हुए। पंडित रामभगत को वे राजपुरोहित कम और अपना दोस्त अधिक समझते थे। अपनी प्रसन्नता प्रकट करने के लिए उन्होंने पंडितजी को ढेर सारी सोने की मुद्राएँ भेंट कीं।

रात को पंडितजी घर में पंडिताइन से कहने लगे कि यह बूता पंडित रामभगत का ही है जिन्होंने राजा साहब के यश को चारों दिशाओं में फैला दिया है। राजा साहब उनकी हर बात को आदरपूर्वक मान लेते हैं। दूसरे राजाओं की तरह वे विलासी या आरामतलब नहीं हैं। वे प्रजा की भलाई का भी सदा ध्यान रखते हैं। प्रजा भी उन्हें सच्चे मन से चाहती है। जीवन की सफलता के अनेक रहस्य उन्होंने राजा साहब को सिखलाए हैं।

इस तरह नींद आने के पहले पंडिताइन यह मान गई कि सचमुच उसके पति नवलगढ़ राज्य की एक बहुत बड़ी हस्ती हैं।

पंडित रामभगत, जब कभी समय मिलता, अपनी इस विद्या की थोड़ी बहुत बानगी अपने इकलौते पुत्र रामचरण को भी देते। उनको यह विश्वास था कि एक न एक दिन जब राजा रामशाह की जगह उनका पुत्र लेगा तो उनकी जगह भी रामचरण बखूबी ले लेगा। अभी तो राजपुत्र और ब्राह्मणकुमार की पढ़ाई अलग–अलग होने लगी। एक दिन ऐसा भी आया कि जब राजेंद्रशाह राजा हुए और पंडितजी का बेटा उनका राजपुरोहित। नई उमर

थी, नए विचार थे। आरंभ से ही दोनों टकराने लगे। राजेंद्रशाह अपने पिता से भिन्न उद्दंड और विलासी था। इसके विपरीत रामचरण कुछ अधिक बुद्धिवादी और तर्क करने वाला था।

अब रोज सवेरे नृत्य और संगीत की महफिल जमती। राजेंद्रशाह को बड़ा मजा आता। रामचरण बीच में कभी उन्हें टोकता, प्रजा की ओर उनका ध्यान खींचता तो वे उसे झिड़क देते। अजीब परिस्थिति आ गई। वैसे रामचरण जानता था कि बुरी आदतों को जल्दी बदला नहीं जा सकता। वह अपमान सहता और अपने कर्तव्य का पालन करता जाता। परंतु कब तक? इधर राजा की विलासप्रियता बढ़ती गई और उधर खजाना खाली होता गया। प्रजा के दुख बढ़ने लगे। रामचरण ने राजा को आखिरी नेक सलाह दी। परिणाम में उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

रामचरण निराश नहीं हुआ। उसने आसपास के गाँवों में शिक्षा प्रसार का बीड़ा उठा लिया। उसे इस काम में बड़ी सफलता मिली। धीरे–धीरे राजा के कुछ खुशामदियों को यह बात खलने लगी। ज्यों–ज्यों रामचरण का यश बढ़ता जाता त्यों–त्यों उसकी शिकायतें भी बढ़ती गईं। एक दिन उसे प्रजा को भड़काने के आरोप में राजा के सामने पेश किया गया।

नए राजपुरोहित ने मामले को संगीन बताया। उसने कहा–प्रजा को राजा के विरुद्ध भड़काना सबसे बड़ा पाप है। राज–दरबारियों ने भी हामी भरी। बेचारा रामचरण क्या करता? उसकी एक न सुनी गई।

मृत्युदंड सुनाने के पहले राजेंद्रशाह ने पूछा कि यदि कोई अंतिम इच्छा है तो कहो। रामचरण ने कहा 'महाराज! अब तक मैंने आपको अपनी शक्ति के अनुसार बहुत सी बातें बतलाई हैं। अब चाहता हूँ कि मोतियों की फसल उगाने का गुर भी आपको बता दूँ।

यह सुनना था कि दरबारी दंग रह गए। कुछ लोगों को शंका हुई कि यह कहीं धोखा देकर भाग न जाए। परंतु राजा ने उस पर विश्वास किया। कहा, ''हम तुम्हें मौका देंगे। अपनी यह विद्या तुम हमें अवश्य सिखा दो''। राजा से आज्ञा लेकर रामचरण अपने काम में जुट गया। उसने कुछ बीघे अच्छी जमीन ली। उसे जोतकर उसमें गेहूँ डलवा दिए। शर्त यह रखी गई कि वह अपना काम चुपचाप ही करेगा। कोई भी उसमें बाधा न डाल सकेगा।

दुश्मनों ने बहुत चाहा कि देखें, आखिर वह पंडित का बच्चा क्या करता है? परंतु वे रामचरण के काम की टोह न पा सके। समय पर अंकुर निकले और फिर पौधे बड़े हो गए।

एक धुंध भरी सुबह को रामचरण राजा और उसके मुसाहिबों को लेकर खेत पर पहुँचा। हर पौधा ओस की सुनहरी बूँदों से जड़ा हुआ था। रामचरण ने कहा लीजिए– मोतियों की फसल। एक मुसाहिब ज्यों ही उसे तोड़ने के लिए बढ़ा, रामचरण चिल्लाया, 'ठहरो! यह मोतियों की पवित्र फसल है, इसे वही व्यक्ति हाथ लगा सकता है जिसने अब तक देश के प्रति गद्दारी न की हो।

सब के चेहरे फीके पड़ गए। कुछ देर तक वे एक दूसरे की सूरत देखते रहे और जिधर से जाते बना, सब चल दिए। अंत में बचे राजा। उनकी आँखें आत्मज्ञान से मानो चमक उठीं। दूसरे ही पल उनका मस्तक पंडित रामचरण के चरणों में था।

शब्दार्थ

लालसा – प्राप्त करने की इच्छा; **विलासी** – आमोद–प्रमोद और व्यसन में डूबा रहने वाला; **बखूबी** – अच्छी तरह से, भली–भाँति; **उद्दंड** – अक्खड़; **गुर**–युक्ति, कार्य सिद्धि का मूलमंत्र; **आराम तलब** – आराम करने की इच्छा रखने वाला; **मुसाहिब** – चाटुकार।

अभ्यास

पाठ से

1. दशहरे पर नवलगढ़ राज्य में होने वाले आयोजन के बारे में लिखिए।
2. राजा रामशाह और उनके राजपुरोहित पंडित रामभगत के आपसी संबंध कैसे थे?
3. रामचरण को नौकरी से क्यों हाथ धोना पड़ा?
4. मोतियों की फसल वस्तुतः क्या थी?
5. रामचरण की सफलता पर किस तरह की प्रतिक्रियाएँ हुईं?
6. राजा रामशाह और उनके पुत्र राजेंद्रशाह के व्यक्तित्व में क्या–क्या समानताएँ थीं? एक तालिका के रूप में लिखिए।

राजा रामशाह	राजा राजेंद्रशाह

पाठ से आगे

BBSV4U

1. अपने गाँव या शहर में किसी पर्व पर चली आ रही प्रथा के विषय में लिखिए।
2. आपके गाँव में प्रचलित तीन अच्छी और तीन बुरी प्रथाओं के विषय में तीन–तीन वाक्य लिखिए।
3. यदि राजेंद्रशाह के स्थान पर रामचरण राजा बन जाता तो राज्य की स्थिति क्या होती?
4. कहानी में राजपुरोहित द्वारा राजा की झूठी तारीफ कर सोने की मुद्राएँ प्राप्त करते हुए बताया गया है। ऐसा करना उचित है या अनुचित? अपने उत्तर तर्क सहित लिखिए।

भाषा के बारे में

1. पाठ में दिए गए इन मुहावरों के अर्थ लिखकर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

   (क) तारीफ के पुल बाँधना

   (ख) बीड़ा उठाना

   (ग) राई का पहाड़ बनाना

   (घ) चेहरा फीका पड़ना

   (ङ) टोह न पाना

2. वाक्य के रेखांकित शब्दों में अनुस्वार (ं) या चंद्रबिंदु (ँ) लगाइए और लिखिए

   (क) राजा ने पंडित जी को ढेर सारी मुद्राए दीं।

   (ख) हर पौधा ओस की सुनहरी बूदों से जड़ा हुआ था।

   (ग) मृत्युदड सुनाने से पहले राजेंद्रशाह ने पूछा।

   (घ) अभी तो राजपुत्र और ब्राह्मण कुमार आगन में खेल रहे थे।

   (ङ) दूर–दूर से नृत्य मडलिया आतीं।

3. निम्नांकित वाक्यों के रेखांकित शब्दों को उनके हिंदी पर्याय से इस तरह बदल कर लिखिए कि उनके अर्थ में परिवर्तन न हो।

   (क) हम तुम्हें मौका देंगे।

   (ख) कुछ खुशामदियों को यह बात खलने लगी।

   (ग) नए राजपुरोहित ने मामले को संगीन बताया।

   (घ) प्रजा को राजा के खिलाफ भड़काना पाप है।

   (ङ) इधर राजा की विलासप्रियता बढ़ती गई और उधर खजाना खाली होता गया।

4. निम्नांकित वाक्यों से कारक चिह्न पहचानकर अलग कीजिए।

   (क) प्रजा का हर व्यक्ति राजा को अपनी शक्ति के अनुसार भेंट चढ़ाता।

   (ख) परिणामतः उसे अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा।

   (ग) उनकी आँखें आत्मज्ञान से मानो चमक उठीं।

(घ) संसार में ऐसा अगर कोई राज्य है तो वह नवलगढ़ है।

(ङ) राजा ने उस पर विश्वास किया।

योग्यता विस्तार

1. एक अन्य लोककथा खोजकर लाइए और उसे अपनी भाषा में लिखकर शाला की भित्ति पत्रिका में लगाइए।
2. 'आँख' से संबंधित मुहावरों की सूची तैयार कीजिए और उनके अर्थ भी लिखिए।
3. अपने अधिकारी या प्रभावशाली व्यक्ति की झूठी प्रशंसा कर लाभ उठाने के उदाहरण तुम्हारे आसपास भी दिखाई देते होंगे। कक्षा, विद्यालय या समाज से ऐसा एक उदाहरण ढूँढ़कर उसके विषय में अपने साथियों से चर्चा करें।
4. आपने राजा और राजपुरोहित की यह कथा पढ़ी। इसी तरह अकबर–बीरबल तथा तेनालीराम की कथाएँ लिखी गई हैं। इन्हें खोजकर पढ़िए।
5. छत्तीसगढ़ के मानचित्र में निम्नांकित स्थानों को दर्शाइए।

(क) खैरागढ़

(ख) रतनपुर

(ग) सरगुजिहा भाषा वाला क्षेत्र

(घ) कांगेर घाटी

(ङ) कुटुंबसर गुफा

(च) मैनपाट

(छ) राज्य का सबसे ठंडा क्षेत्र

(ज) दंतेवाड़ा

BCBM85